सीमित प्रसार के लिये

कारीगर नज़रिया

● यह कारीगर समाज का ज्ञान आंदोलन है। ●
● कारीगर समाज अपने नज़रिये पर फक्र करें। उनका नज़रिया, उनकी विद्या, उनका हुनर पढ़े-लिखे लोगों के मुकाबले कम दर्जे का नहीं है। ●
● कारीगर नज़रिये पर गढ़ी गई दुनिया आज की दुनिया से एक बेहतर, खुशहाल और बराबरी की दुनिया बनेगी। ●

अंक 1 | अप्रैल 2011 | सहयोग राशि : 2 रुपये

कारीगर को मज़दूर मत बनाओ

हर आदमी अपने ज्ञान के आधार पर अपनी ज़िन्दगी चलाता है। जब उससे उसका यह हक छीन लिया जाता है तो वह मज़दूर बन जाता है। किसानों से जमीन छीन लीजिए, बुनकरों के बिनाई-कढ़ाई के यंत्रों की जगह बड़ी-बड़ी मशीने लगवा दीजिए, नदी में मोटरबोट चलवा दीजिए, धोबियों से घाट छीन लीजिए और पैसे वाले लांड्री चलवा दें, बाजार में बाल काटने के बड़े-बड़े सैलून खुल जायें, बड़े-बड़े मॉल खोलकर और सुंदरीकरण के नाम पर पटरी के व्यवसाइयों को खदेड़ दीजिए और इसी तरह सभी किस्म के कारीगरों से उनके काम करने के साधन छीन लीजिए, तो ये सब हुनरमंद कारीगर मज़दूर बन जायेंगे। कारीगरों से साधन छीनने के कई तरीके हैं- कानून बनाकर, विकास के नाम पर, पैसे के जोर पर या बाजार में इनके दाम को पिटवाकर। इन तरीकों से ये सब बड़े पैमाने पर मज़दूर बन जायेंगे, सस्ते मजदूर। आज के जो सस्ते मज़दूर हैं वे सब एक समय कारीगर थे। यही कारीगर की तबाही का रास्ता है।

किसी को भी तबाह करना है तो उससे वह संसाधन छीन लो जिसके बल पर वह अपने ज्ञान और हुनर का इस्तेमाल करता है। यह केवल काम का छीना जाना नही है, यह ज्ञान, इल्म का छीना जाना है।

हर आदमी अपने ज्ञान के बल पर अपनी जीविका चलाये, यह उसका जन्मसिद्ध अधिकार है। इसी अधिकार की लड़ाई को ज्ञान आंदोलन कहते हैं।

हर मज़दूर खुद को कारीगर मानें और वैसा ही कहें।

विस्थापन रोको सम्मेलन

10 अप्रैल 2011

गंगा और वरुणा के संगम पर 10 अप्रैल 2011 को दिन भर चले इस विस्थापन रोको सम्मेलन में मुख्य रूप से यह बात हुई कि विस्थापन विरोधी संघर्ष पूरे लोकविद्याधर समाज की एकता के स्थान हैं। आज सरकार बड़े व्यवस्थित ढंग से लोकविद्याधर समाज को विस्थापित करके ज़मीनें, खनिज, बाजार और धंधे पूंजीपतियों को सौंप रही है। किसान, कारीगर, आदिवासी और ठेला-गुमटी वाले जब चाहे तब उजाड़ दिए जाते हैं। वे अपनी जमीनों, संसाधनों, धंधों और घरों तक से बड़े पैमाने पर बेदखल किये जा रहे हैं। गाँव के गाँव उजाड़ दिए जाते हैं और बस्तियों के नामों-निशान मिट जाते हैं। ये सब वही लोग हैं जो लोकविद्या के बल पर जीवन यापन करते हैं। लगभग 100 की भागीदारी के इस सम्मेलन में सभी वक्ताओं ने इस बात पर जोर दिया कि विस्थापित समाजों का पुनर्वास एक धोखा हैं। मुआवजे, फिर से बसाने और नौकरी देने की राजनीति में कोई समाधान नहीं हैं।

विस्थापन मनुष्य को उसकी विद्या, लोकविद्या से अलग कर देता है और इसी में उसकी ज़िन्दगी बर्बाद होने का पैगाम होता है। लोकविद्याधर समाज का लोकविद्या से अलगाव, यही गरीबी और मजबूरी का सबसे बड़ा कारण है। लोकविद्या के आधार पर जीवनयापन करना मनुष्य का मौलिक अधिकार है। वास्तव में यह उसका जन्मसिद्ध अधिकार है। अपनी विद्या के बल पर हर कोई अपनी ज़िन्दगी चला सके इसको संवैधानिक सुरक्षा मिलनी चाहिए। ये बातें विस्थापन से गहरे से जुड़ी हुई हैं, इसलिए विस्थापन के सक्षम विरोध के लिए पूरे लोकविद्याधर समाज को एकजुट होना होगा।

सम्मेलन बुलाया ही यह कह कर गया था कि लोकविद्याधर समाज की व्यापक एकता के रास्तों पर बातचीत होगी। सभी ने इस पर राय दी और अंत में एक लोकविद्या मंच का

गठन किया गया जिसमें विभिन्न भागीदार संगठनों के प्रतिनिधि शामिल हुए। तय हुआ कि हर महीने एक बार लोकविद्या मंच कि बैठक होगी।

सम्मेलन में विद्या आश्रम, डिबेट सोसायटी, गांधियन इंस्टिट्यूट आफ स्टडीज, भारतीय किसान यूनियन वाराणसी व चंदौली, अखिल भारतीय किसान महासभा चंदौली, किसान संघर्ष समिति मोहन सराय, किसान संघर्ष समिति करसड़ा, बुनकर वेलफेयर संघर्ष समिति वाराणसी, नाई समाज दशाश्वमेध घाट, मत्स्यजीवी सहकारी समिति सराय मोहाना, पटरी व्यवसायी संगठन इंग्लिशिया लाइन और लोकविद्या नौजवान सभा शामिल रहे। इनके अलावा कई सामाजिक कार्यकर्ता, महिलाएं, कारीगर और किसान व्यक्तिगत रूप में भी शामिल हुए।

इस मौके पर विद्या आश्रम ने विस्थापन रोको के नाम से एक पुस्तिका का प्रकाशन किया। **–विद्या आश्रम**

कारीगर नज़रिया कैसे बना

कारीगर को अपनी विद्या और ज्ञान पर फक्र हो, इस विषय पर वाराणसी में जनवरी से मार्च 2011 के बीच कई कारीगर बस्तियों और समाजों के बीच बैठकें व वार्तायें हुईं। इसमें बुनकर समाज, मल्लाह समाज, रजक समाज, काष्ठ खराद खिलौना कारीगर समाज आदि शामिल रहे। बुनकर समाज के बीच रसूलपुरा, महमदपुरा, पीलीकोठी, आलमपुरा, छित्तनपुरा, दीनदयालपुर (पुरानापुल), कोनिया और सरायमोहाना में बैठकें हुईं। इन सभी बैठकों में प्रत्येक में 15-20 कारीगर उपस्थित थे। रजक समाज की पंचायत में तथा मल्लाह समाज के नेतृत्व से वार्तायें हुईं। इन सभी बैठकों में निम्नलिखित बिन्दुओं पर वार्ता हुई।

1. 'कारीगर नज़रिया' कारीगर समाज का ज्ञान आंदोलन है।
2. कारीगर अपने ज्ञान, हुनर और मेहनत के जरिये काम करता है
3. कारीगर को मजदूर समझना बंद होना चाहिए। उनका वाजिब हक उन्हें मिलना चाहिए।
4. कारीगर सरकार की गलत नीतियों के शिकार हैं। उनकी मेहनत का पूरा दाम नही मिलता। उनके हुनर का भी पूरा दाम नही मिलता। उनके ज्ञान का दाम मिलना तो दूर, उसे पहचाना भी नहीं जाता।
5. कारीगर का अपना नजरिया होता है। यह इंसानियत का नज़रिया है, कुदरती नज़रिया है। कम्पनियों के शोषण और धुएं से निजात का रास्ता कारीगर के पास है।
6. नीतियाँ, योजनायें और कार्यक्रम बनाने में कारीगर की राय शामिल हो तो खुशहाली का माहौल बन सकता है।
7. कारीगर नज़रिये को इज्जत होगी तभी उसकी आमदनी दूसरों के बराबर होगी और तभी ये दुनिया बचेगी।
8. कारीगर अपने नज़रिये पर फक्र करें और अपना ज्ञान आंदोलन खड़ा करें।

इन सभी बैठकों व वार्ताओं का नतीजा ही 'कारीगर नज़रिया' के प्रकाशन के रूप में सामने आया है।

बुनकर की कमाई क्यों नहीं बढ़ती?

आलमपुरा के सरदार नियाज अहमद से वार्ता

''रेशम का दाम रूपये 1500/- प्रति किलो था, अब रूपये 3000/- प्रति किलो हो गया। बुनकरी की मजदूरी क्यों नहीं बढ़ती?'' यह सबसे पहला सवाल नियाज अहमद ने 'कारीगर नज़रिया' के वार्ताकारों के सामने रखा। ''बुनकर तो मजदूर हैं, इनकी मजबूरी है कि रोज कुआँ खोदो और पानी पियो।''

नियाज अहमद मानते हैं कि बुनकर हर तरफ से मारा जा रहा है— मुख्य रूप से उन्होंने नीचे लिखी बातें गिनाईं और सुझाव भी दिये।

1. एक करघा बुनकर मात्र रूपये 65/- रोज कमाता है। यह नरेगा की मजदूरी से भी कम है। बुनकर की मजदूरी बढ़नी चाहिए।
2. बुनकर को काम के समय यानि दिन में 9 से 6 बजे तक बिजली मिले तो वह समय से काम करके अपनी जिन्दगी को व्यवस्थित कर सकता है।
3. बुनकर को बड़े उद्योगों की तरह बराबर की बिजली मिलनी चाहिए। बुनकर के बिजली बिल माफ होने चाहिए।
4. बुनकर का बाजार खत्म हो रहा है। पहले एक करघे वाला बुनकर भी अपना सामान बेच लेता था। अब कच्चा माल पूंजीपति और कारोबारियों के हाथ में ही रहता है, इसलिए छोटा बुनकर काम के लिए आजाद नही है। बुनकर को उसका बाजार मिले।
5. केन्द्र से बुनकरों के लिए करोड़ों रूपये का बजट आता है, उसमें से बुनकर को कुछ नही मिलता। बुनकर के कार्ड पर या खाते में मदद दी जाये। सोसाइटी के मार्फत न दी जाये।
6. कारीगरों का संगठन बनना चाहिए। इस संगठन में गद्दीदार न हों।

('कारीगर नजरिया' की ओर से एहसान अली और दिलीप कुमार 'दिली' से हुई वार्ता के आधार पर)

कारीगर का ज्ञान बनाम यूनिवर्सिटी का ज्ञान

कारीगर को अपने नज़रिये पर फक्र क्यों न हो? आज पढ़े-लिखे लोग बार-बार कहते हैं कि विकास तो केवल उनके द्वारा हासिल ज्ञान के बल पर ही हुआ है। लेकिन वे बड़ी चालाकी से इस बात को छुपा जाते हैं कि उन्हीं के ज्ञान ने कुदरत की तबाही का ऐसा सिलसिला चला दिया है कि आज दुनिया का अस्तित्व ही खतरे में है। आदमी-आदमी में गैर-बराबरी बढ़ाना और अमीर-गरीब की खाई को तेजी से चौड़ा करना भी इन्हीं की विद्या की देन है। थोड़े से लोगों के ऐशो-आराम की जिन्दगी जुटाने के लिए कारीगर और किसान समाज के बहुत बड़े-बड़े हिस्सों को गरीबी और गुलामी में ढकेला जाना, इन्हीं की विद्या के बल पर हुआ है। यूनिवर्सिटी का ज्ञान फिर बेहतर ज्ञान कैसे कहा जायेगा?

कारीगर का नज़रिया, इल्म और हुनर आज इस संकट से दुनिया और मनुष्य समाज को उबार सकता है, बशर्ते कारीगर अपने नज़रिये पर अपना भरोसा बढ़ायें, उसे बेहतर ज्ञान मानें और उस ज्ञान को अधिक गहरा और पुख्ता बनाने में लग जायें। इतना ही काफी नही है, बल्कि अपने ज्ञान के इस्तेमाल के संसाधनों पर अपना हक जाहिर करें। अपने ज्ञान का दावा पेश करें। बुनकर, मल्लाह, धोबी, रंगरेज,दर्जी, नाई, कुम्हार, बढ़ई, लोहार, हर किस्म के मिस्त्री (बिजली,मोटर-गाड़ी, मकान बनवाई, पानी, मोबाइल, कम्प्यूटर, टीवी आदि।) यानि पूरा कारीगर समाज एकजुट हो और इस समाज के उद्योगों के संचालन, उनकी व्यवस्था, आवश्यक वित्त तथा संसाधनों के वितरण आदि पर अपनी राय बनायें और अपने ज्ञान के आधार पर इनके प्रबन्धन में अपना दावा पेश करें। तभी कारीगर समाज के कष्ट दूर होंगे और तभी पूरे समाज के लिए नया और बेहतर जीवन मिल पायेगा।

इस पर विचार करें–

- **कारीगर अपने ज्ञान और श्रम दोनों के मूल्य के हकदार हैं।**
- **आज उन्हें श्रम का ही पूरा मूल्य नही मिलता।**
- **कारीगर अपने श्रम के वाजिब मूल्य और ज्ञान के मूल्य दोनों का दावा पेश करें।**

कारीगर नज़रिया भाईचारे का नज़रिया है।

समाज में दो किस्म की कारीगरी देखने को मिलती है। एक वह जो पीढ़ियों और सदियों से मिली विरासत पर आधारित है और दूसरी वह जो नई है। पुश्तैनी कारीगरी समाज में स्थित है, बुनकर, मल्लाह, राजगीर, कुम्हार, धोबी, नाई और ऐसे अनेक समाज अपने पुश्तैनी ज्ञान और हुनर से अपनी जीविका चलाते हैं। बाजार के हिसाब से और नई-नई तकनीकों के चलते वे अपने ज्ञान और हुनर में इजाफा करते रहते हैं। फिर भी न उनके श्रम का ही मूल्य मिलता है और न ज्ञान का ही मूल्य मिलता है। मूल्य मिलना तो दूर उनके ज्ञान की पहचान तक नही की जाती। आधुनिक तकनीक के कारीगर को भी उसके हुनर का दाम बहुत कम मिलता है। कम्प्यूटर, मोटर-गाड़ी मरम्मत, बिजली, टी0वी0, मोबाइल व तमाम तरह के मिस्त्री का काम करने वाले कारीगर भी समाज के गरीब वर्गों से ही आते हैं। वे अपने कामों में बड़ा हुनर रखते हैं। और उनके बिना कोई भी आधुनिक व्यवस्था नही चल सकती।

कारीगर नजरिया इन दोनों किस्म के करीगरों के भाईचारे का नज़रिया है। यह कारीगर समाज के अपने ज्ञान-विज्ञान के आधार पर कुदरत से दोस्ती, भाईचारे और इन्साफ का समाज बनाने का दावा पेश करने का नज़रिया है।

बुनकर की फरियाद कौन सुने ?

जमील अहमद (हथकरघा कारीगर) से वार्ता

दस साल पहले साड़ी बिनाई रूपये 1800/- प्रति साड़ी थी। एक साड़ी 10-15 दिन में तैयार होती थी। आज उसी साड़ी की बुनाई का दाम रूपये 1350/- है जब कि महँगाई दोगुना बढ़ गयी। बुनकर की मजदूरी घट गई। इसीलिए बुनकर परेशान है।

रेशम का दाम बढ़ा तो साड़ी का दाम बढ़ा। सरकार ने टैक्स छूट दी, तो मालिक महँगी दर पर साड़ी बेचकर मुनाफा कमा लेता है और बुनकर की मजदूरी नही बढ़ती। मालिक मंदी की बात कहकर मजदूरी बढ़ाने से इनकार करता है।

बुनकर बाजार के तौर-तरीके नही जानता। वह बाजार से दूर हो गया है। पहले बाजार में पचासों कारीगर एक-एक साड़ी लाते थे और बेच लेते थे। गद्दीदार के पास भी कई मेल की साड़ियाँ हो जाती थीं। लेकिन वह सिस्टम अब खत्म हो गया। अब एक करघा वाला कारीगर अपना माल नही बेच पाता।

हथकरघा कारीगर को महँगे दर पर बिजली खरीदनी पड़ती है। पावरलूम की तरह हथकरघा बुनकर को भी सस्ती दरों पर बिजली मिलनी चाहिए। बड़े उद्योगों की तरह हमें भी 24 घंटे बिजली मिले तो हम भी खुशहाल होंगे। हमें बराबरी से बिजली मिले।

सोसाइटी वाले बुनकर का फायदा उठाते हैं। हमारे नाम से आयी सारी सुविधाओं को ले लेते हैं। हमारी फरियाद सुनने वाला कोई नही हैं।

घाटों से धोबी समाज का विस्थापन

गंगा घाटों को पर्यटन की दृष्टि से खूबसूरत बनाने की परियोजनाओं के चलते गंगाजी के किनारे पर रहने वाले धोबी समाज पर गाज गिरी है। गंगाजी का पानी प्रदूषित होता है, यह कह कर धोबी समाज द्वारा घाटों पर कपड़ा धोने पर पाबंदी लगायी गयी है। नये धोबी घाटों का निर्माण अभी पूरा नही हुआ है और न आवंटन ही ठीक से किया गया है। ऐसे में धोबी समाज पर रोजी रोटी का संकट है। समाज अवैध वसूली से भी तंग है।

धोबी समाज को इस तरह विस्थापित करना उनके हुनर, सेवा और नागरिकता का अपमान है। 'जिला धोबी घाट बचाओ संघर्ष समिति' ने अपने समाज की समस्याओं को लगातार प्रशासन के सामने रखा, लेकिन प्रशासन ने अभी तक कोई प्रभावी कदम नही उठाया है।

'जिला धोबी घाट बचाओ संघर्ष समिति' की माँग है कि नदेसर धोबी घाट एवं कोनिया धोबी घाट का आवंटन शीघ्र किया जाय और गंगा कार्य योजना के अन्तर्गत बने धोबी घाट का संचालन सुचारू रूप से हो।

'जिला धोबी घाट बचाओ संघर्ष समिति' के अध्यक्ष नन्दूलाल कन्नौजिया और संरक्षक राजकुमार कन्नौजिया से हुयी 'कारीगर नज़रिया' की वार्ता पर आधारित।

बिजली के लिये बुनकरों का संघर्ष

बुनकर बिरादराना तंजीम जिला वाराणसी की ओर से मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश, को दिनांक 28 मार्च 2011 को निम्नलिखित पत्र भेजा गया।

सेवा में,

माननीया मुख्य मंत्री महोदया, उ.प्र. शासन लखनऊ —द्वारा जिलाधिकारी, वाराणसी

विषय– वाराणसी के बुनकरों की बदहाली व आर्थिक स्थिति बेहद खराब होने के कारण वाराणसी जनपद के बुनकरों का सम्पूर्ण बिजली बकाया माफ करने के सम्बन्ध में।

महोदया,

आपका कृपालु ध्यान उपरोक्त विषय की ओर आकर्षित कराते हुए अवगत कराना है कि वाराणसी जनपद सदियों से विश्व प्रसिद्ध रहा है। यहाँ के कलाकार बुनकरों ने अपनी कलाकारी से पूरे देश का नाम ईमानदारी से रौशन किया है। यह बात किसी से छिपी नही है। वाराणसी के बुनकरों की हालत इन दिनों बेहद खराब है। जैसा की आपको मालूम है कि बनारस का बुनकर आर्थिक तंगी, बेरोजगारी, महँगाई के चलते पूरी तरह से टूट चुका है। उनकी हालत ऐसी है कि पूरी सूरते हाल बयाँ करना मुश्किल है। बिजली बकाया के चलते कितने ही बुनकर घर बार बेचकर देहात की तरफ भाग रहे हैं। इतना ही नही बुनकर समाज अपने परिवार का पेट भरने के लिए अपने मासूम बच्चों से भी मजदूरी करवाने पर मजबूर है। बिजली बकाया वाराणसी के बुनकरो पर कैंसर की तरह से है। जिसके चलते आत्महत्याओं का दौर रुकने का नाम नही ले रहा है। बेबस होकर अपना तथा अपने परिवार का पालन पोषण हेतु बुनकर तेजी से अन्य प्रदेशों में पलायन भी कर रहा है। यह बात किसी से छिपी नही है। विगत कई वर्षो से बनारस का बुनकर बिजली बकाया के बोझ तले दबता चला जा रहा हैं। महँगाई के इस दौर में बुनकरों की हालत बीस वर्ष पहले जैसी ही है। 60 से 80 रूपया का प्रतिदिन काम करने वाला बुनकर बिजली बकाया की भरपाई कैसे कर सकता है? उन्हें तो दो जून की रोटी कमाना भी मुश्किल हो गया है। जब से प्रदेश में गरीबों की हिमायत वाली बी०एस०पी० सरकार आयी है बुनकरों की काफी उम्मीदें जगी है। पूर्व की सरकारों ने गरीब कमजोर एवं बुनकर समाज पर ध्यान नही दिया नतीजा सबके सामने है। लेकिन इस समय गरीबों एवं कमजोरों और बुनकरों की हमदर्द वाली प्रदेश सरकार से पूरे बुनकर समाज को बेहद उम्मीदें हैं क्योंकि आपने हमेशा गरीबों पर विशेष ध्यान दिया है। वर्तमान समय में बुनकरों की आरसी काटी जा रही है। विभागी अधिकारियों के जोर जबरदस्ती के चलते बुनकर पूरी तरह से भयभीत है।

अनुरोध

बुनकर बिरादराना तंजीम वाराणसी आपसे अनुरोध करता है कि बुनकरों की बदहाली पर अपनी कृपा दृष्टि रखते हुए बुनकरों का सम्पूर्ण बिजली बकाया माफ करने तथा वाराणसी के बुनकरों की काटी गयी आरसी रोकवाने और बुनकरों के साथ वसूली में जोर जबरजस्ती न करने का सम्बन्धित अधिकारियों को निर्देश देने की कृपा करें, जिससे पूरे बुनकर समाज का कल्याण हो सके। हमारा बुनकर समाज आपका जीवन पर्यन्त आभारी रहेगा।

माँग

1. वाराणसी जनपद में बुनकरों का सम्पूर्ण बिजली बकाया माफ किया जाये। 2. बिजली बकाया के नाम पर काटी गयी आरसी पर तत्काल रोक लगायी जाये। 3. बिजली बकाया के नाम पर बुनकरों का उत्पीड़न बन्द किया जाये।

सरपरस्त– हाजी मुख्तार अंसारी (तंजीम बावनी), हैदर अली महतो(तंजीम चौतिसी), सरदार मो. एकरामुद्दीन (तंजीम बाईसी), सरदार हाजी निजामुद्दीन (तंजीम बाईसी), सरदार मकबूल हसन अंसारी (तंजीम चौदहो), मो. हासिम अंसारी (तंजीम बारोहा), मुमताज अली बाबर लल्लापुरा, सरदार मो. मुर्तुजा अंसारी (तंजीम पॉचो), सरदार मो0यूसुप अंसारी (तंजीम पॉचो)।

–बुनकर प्रतिनिधि : मो0 हासिम अंसारी, सी0 15/212, लल्लापुरा वाराणसी

काष्ठ खराद खिलौना कारीगरों की माँग

कारीगरों के सहयोग से हमारी समिति चलती है। पर यहाँ और पाँच सहकारी समितियाँ हैं। ये समितियाँ कारीगरों को बहलाकर खुद का स्वार्थ सिद्ध करती हैं। इससे कारीगर को वाजिब मूल्य व साधन नहीं मिल पाता। हमें कच्चा माल डिपो की जरूरत है। लकडी के ऊपर पुलिस वसूली बन्द हो। एक कुन्तल के पीछे 30-40/- रुपया लग जाता है। 1 ट्रक पर 4000/- रूपये लग जाते हैं। लकड़ी महँगी पड़ जाती है। कारीगर को कमाई नहीं हो पाती। सरकार अन्यों की तरह हमें भी बिजली पर छूट दे व कार्य करने के लिए पूरे समय बिजली मिले। —यह वाराणसी काष्ठ खराद खिलौना दस्तकारी समिति के मंत्री रमाशंकर का कहना है।

अपील व सम्पर्क

'कारीगर नजरिया' कारीगर समाज का अखबार है। इसमें कारीगर अपनी समस्याओं, माँगों, क्षमताओं और समाज के बारे में अपने नजरिये को सामने लायें।

सम्पर्क पता–
विद्या आश्रम, सा10/82ए, अशोक मार्ग, सारनाथ, वाराणसी-221007
सम्पर्क फोन–
दिलीप कुमार 'दिली', मो. 9452824380
एहसान अली, मो. 9336016119

कारीगर नजरिया का यह अंक प्रेमलता सिंह, एहसान अली, दिलीप कुमार 'दिली' व रमाशंकर के सहयोग से बनाया गया है। **'कारीगर नज़रिया'** के अगले अंक को तैयार करने में कारीगर समाज के लोग आगे आयें।